PGCMHT

मलयालम–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.एम.एच.टी.)

सत्रीय कार्य
2020

(जनवरी 2020 और जुलाई 2020 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

मलयालम–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.एम.एच.टी.)
सत्रीय कार्य 2020

(जनवरी 2020 और जुलाई 2020 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'मलयालम–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.सी.एम.एच.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। चार पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के तीन पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा और चौथा पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित है। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार हैं :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2020 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2020 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	31.03.2020	30.09.2020
एम.टी.टी.–004 मलयालम–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	31.03.2020	30.09.2020
एम.टी.टी.–005 मलयालम–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद	31.03.2020	30.09.2020

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, मलयालम–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ–साथ इन भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक :	नामांकन संख्या : ....
	नाम : ....
	पता : ....
	....
पाठ्यक्रम कोड :........................	
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	
सत्रीय कार्य कोड :	हस्ताक्षर :........................
अध्ययन केंद्र का नाम:	तिथि : ....

---

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहीं से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। मलयालम और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियां न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

भारतीय भाषाओं में अनुवाद (एम.टी.टी. 001)
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी. 001
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी. 001/ए.एस.ए.टी/
(टी.एम.ए.)/2020

पूर्णांक—100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। लगभग 300 शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. अनुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा से आप क्या समझते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 10
2. ध्वनि और वर्ण का परिचय देते हुए भारतीय भाषाओं की वर्णमालाओं की चर्चा कीजिए। 10
3. भारत के भाषाई परिदृश्य पर एक निबंध लिखिए। 10
4. संस्कृति की दृष्टि से भारतीय भाषाओं की अनेकता में किस तरह की एकता मौजूद है? 10
5. बहुभाषी समाज में अनुवाद की आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डालिए। 10
6. भारत की विभिन्न भाषाओं के बीच शब्दावली संबंधी समानता का परिचय दीजिए। 10
7. अनुवाद के साधन–उपकरण से आप क्या समझते हैं? इनका उपयोग किस तरह किया जाता है? 10
8. विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिखित साहित्य को भारतीय साहित्य किस आधार पर कहा जा सकता है, तर्क सहित उत्तर दीजिए। 10
9. बहुभाषिकता का अर्थ स्पष्ट करते हुए भारतीय समाज की बहुभाषिकता की विशिष्टता बताइए। 10
10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 10
    (क) आशु अनुवाद
    (ख) कंप्यूटर अनुवाद

मलयालम–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन (एम.टी.टी.–004)
(जनवरी 2020 और जुलाई 2020 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–004
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–004 / एएसटी / (टी.एम.ए) / 2020

अधिकतम अंक : 100

---

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग तीन सौ शब्दों में दीजिए: 10 × 2 = 20

   क) हिंदी और मलयालम में रामकथा पर आधारित ग्रंथों की संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

   ख) कथकली की प्रमुख विशेषताओं का परिचय दीजिए।

2. निम्नलिखित मलयालम शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए: 5

1) സ്വീകരണ ശ്രുതി	11) വെണ്ണ
2) അനുകാരം	12) ശ്രുംഗണനം
3) തിരഞ്ഞെടുപ്പ്	13) ശൃംഖല
4) കാലാവസ്ഥ	14) പലപ്പിച്ച്
5) ഒപ്പ്	15) അംഗീകാരം
6) സൂചി	16) തലപ്പാവ്
7) വിശ്വസ്തനായ	17) കൃഷി
8) ഭേദഗതി	18) കഴിഞ്ഞുകൂ
9) കണ്ടിടപാട്	19) അനന്തരവൻ
10) ചെലവ്	20) കൊതുക്

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के मलयालम पर्याय लिखिए : 5

1) नियुक्ति
2) कबूतर
3) पाजेब
4) सप्ताह
5) अंगोछा
6) तलवार
7) दौरा कार्यक्रम
8) शकरकंद
9) पैदल
10) नुकसान
11) अखबार
12) इन्कार करना
13) विज्ञान
14) अनुशासनहीनता
15) मकड़ी
16) पपीता
17) उल्लू
18) खींचना
19) इलाज करना
20) प्रतिलिपि

4. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी अनुवाद कीजिए : 20

1) നാം എല്ലാവരും രാജ്യത്തെ സ്നേഹിക്കണം.
2) താങ്കൾക്ക് അറബി ഭാഷ കൂടി സംസാരിക്കാൻ അറിയാമോ ?
3) ഉച്ച ഭക്ഷണത്തിനുശേഷം ഞാൻ ചന്തയിലായിരുന്നു.
4) അഞ്ചു വർഷങ്ങൾക്ക് ശേഷം പോലീസ് കള്ളനെ പിടിച്ചു.
5) കഴിഞ്ഞ കൊല്ലം കൃഷിക്കാർക്ക് നല്ല വിളവ് ലഭിച്ചു.
6) ക്ലാസിൽ താമസിച്ചു വരുന്നവർ പുറത്തു നിൽക്കണം.

7) അവസാനം ഭീമൻ കീചകന്റെ കഥ കഴിച്ചു.

8) മഞ്ഞുകാലം വരുമ്പോഴേക്കും മാവു തോറും
പൂവ് കാണാം.

9) എന്റെ കൊച്ചുമകൾക്ക് ജലദോഷം പിടിച്ചു.

10) ഒട്ടകത്തിന് മരുഭൂമിയിൽ വേഗത്തിൽ
നടക്കാൻ കഴിയും.

11) അയാൾ കഴിഞ്ഞ കാലത്തെ കുറിച്ച് ചിന്തിച്ചു.

12) പാലത്തിന്റെ പണിതീരാൻ ഒരുമാസം
പിടിക്കും.

13) കോഴിക്കോട് ഇന്ത്യയിലെ പ്രധാന നഗരങ്ങളിൽ
ഒന്നാണ്.

14) ശ്രീമാൻ ജി, ഞാൻ അകത്തു വരട്ടെയോ?

15) ഈ തിയേറ്ററിൽ ഞായറാഴ്ച രാവിലെ
കുട്ടികൾക്കുള്ള ചലചിത്രം പ്രദർശിക്ക
പ്പെടുന്നു.

16) നിങ്ങൾ മോഹൻ രാകേഷിന്റെ 'ആഷാഢ്
കാ ഏക് ദിൻ' വായിച്ചിട്ടുണ്ടോ?

17) ഭാരതത്തിലെ ഭൂരിഭാഗം ജനങ്ങളും
താമസിക്കുന്നത് ഗ്രാമങ്ങളിലാണ്.

18) കയ്യിൽ നിന്നു വീണ ഗ്ലാസ് പൊട്ടിപ്പോയി

19) പിതൃസഹോദരി ഇന്നലെ കൊച്ചിയിൽ നിന്നു വന്നു.

20) ഗ്രാമത്തിൽ വാർത്തകൾ വൈകിയാണ് കിട്ടുന്നത്.

5 (क) निम्नलिखित मुहावरों / लोकोक्तियों का आशय हिंदी में स्पष्ट कीजिए : 10

1) കണ്ണിലെ കരട്
2) ഭാഗ്യം തെളിയുക
3) കുറ്റം കണ്ടു പിടിക്കുക
4) മുൻകൈ എടുക്കുക.
5) ഒഴിവുകഴിവു പറയുക.
6) അഞ്ചു വിരലും ഒരു പോലല്ല.
7) മുറ്റത്തെ മുല്ലയ്ക്ക് മണമില്ല.
8) ദാനം കിട്ടിയ പശുവിന്റെ പല്ലെണ്ണാനുണ്ടോ?
9) മുറിവൈദ്യൻ ആളെക്കൊല്ലും.
10) വിതച്ചത് കൊയ്യും.

(ख) निम्नलिखित मुहावरों / लोकोक्तियों के लिए हिंदी मुहावरे / लोकोक्तियाँ लिखिए : 10

1) സ്വന്തം കാലിൽ നിൽക്കുക.
2) ഒരു വെടിക്ക് രണ്ടു പക്ഷി.
3) കച്ചിച്ചു [illegible]ടുക
4) ചെകുത്താനും കടലിനും നടുക്ക്
5) കണ്ണിലുണ്ണി
6) കൈയൂക്കുള്ളവൻ കാര്യക്കാരൻ.
7) അരക്കുടം അലയ്ക്കും നിറകുടം തുളുമ്പില്ല
9) വേണമെങ്കിൽ ചക്ക വേരിലും കായ്ക്കും.
9) [illegible] പോകുന്ന വിറക് [illegible]
10) [illegible]

6 निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए:

10 × 2 = 20

(क) ആകാശം, വായു, അഗ്നി, ജലം, ഭൂമി ഇവയാണ് 'പ്രപഞ്ച'ഘടകങ്ങൾ. ഗുണാതീതമായ ബ്രഹ്മത്തിൽ നിന്ന് ആദ്യം സംജാതമായത് ആകാശമാണെന്ന് ശാസ്ത്രം. Space (ശൂന്യാകാശം) എന്ന ഈ തത്ത്വം കേവലശൂന്യതയല്ലെന്ന് മനസ്സിലാക്കാം. ഇത് ചൈതന്യ (Energy) തലത്തിലുള്ള അസ്തിത്വമാണ്. ഇതിന്റെ ഗുണം ശബ്ദമാണ്. ചൈതന്യതരംഗങ്ങളുടെ സഞ്ചലനത്തിൽ നിന്നുദ്ഭൂതമാകുന്ന ഈ സൂക്ഷ്മനാദം യോഗികൾക്ക് അനുഭൂതമാകുന്നു. ശൂന്യാകാശ സഞ്ചാരികളും ഇത്തരം ഒരു നാദത്തെപ്പറ്റി പ്രതിപാദിച്ചിട്ടുണ്ട്.

ആകാശത്തിൽനിന്നാണ് വായു (വാതകങ്ങൾ) സൃഷ്ടമായത്. ഇതിൽ പകുതി വാതകാവസ്ഥയിലും പകുതി ആകാശാവസ്ഥയിലും (Energy) സ്ഥിതിചെയ്യുന്നു. ഇതിനെ സ്പർശം വഴി അറിയാൻ കഴിയുന്നത്കൊണ്ട് ഇതിന്റെ ഗുണം സ്പർശം.

വായു(വാതകങ്ങൾ)വിൽനിന്ന് അഗ്നി സൃഷ്ടമായി- ഓക്സിജനും ഹൈഡ്രജനും കൂടിച്ചേരുമ്പോൾ ജലത്തോടൊപ്പം അഗ്നി സംജാതമാവുന്നതുപോലെ. അഗ്നിയുടെ ഗുണം രൂപമായി ഗണിക്കപ്പെട്ടിരിക്കുന്നു. ഇത് ബാഹ്യദൃഷ്ടിക്ക് ഗോചരമാണ്. അഗ്നിയിലും വായു, ആകാശം എന്നിവയുടെ അംശം നിലനില്ക്കുന്നുണ്ട്.

(ख) ഇപ്പോൾ പാകിസ്ഥാനിൽ പെട്ട സിന്ധ് ദേശത്ത് ഹരപ്പ എന്ന സ്ഥലത്തു നിന്ന് മേജർ ജനറൽ ക്ലാർക്ക് എന്നൊരാൾ അപൂർവ്വമായൊരു വസ്തു കണ്ടെടുത്തു. ഒരുതരം മൃദുശിലകൊണ്ടുള്ള ചെറുചതുരക്കട്ട. അതിന്മേൽ വലത്തോട്ട് മുഖമായി നിൽക്കുന്ന കാളയുടെ രൂപം, അതിനു മുകളിൽ ആറു ചിഹ്നങ്ങളടങ്ങിയ ഒരു ലിഖിതം—ഇതായിരുന്നു ആ വസ്തു. ഹരപ്പയിൽനിന്നു കിട്ടിയ ഈ മുദ്രയെക്കുറിച്ച് 1875-ൽ, അന്ന് ഇന്ത്യയിലെ പുരാതത്ത്വവകുപ്പിന്റെ മേധാവിയായിരുന്ന അലക്സാണ്ടർ കന്നിംഗ്ഹാം റിപ്പോർട്ടുചെയ്യുകയുണ്ടായി. പിന്നീട് കഷ്ടിച്ച് അര നൂറ്റാണ്ടു കഴിഞ്ഞ് പുരാതത്ത്വവകുപ്പിലെ ദയാറാം സാഹ്നിയും ആർ. ഡി. ബാനർജിയും ഹരപ്പയിലും മോഹൻജോദാരോവിലും നടത്തിയ ഉത്ഖനനങ്ങളിൽ മറ്റു വസ്തുക്കളോടൊപ്പം സമാനമായ നിരവധി മുദ്രകളും കൂടി പുറത്തുവന്നു. ഉത്ഖനനത്തിനു നേതൃത്വം നൽകിയ സർ ജോൺ മാർഷൽ സൈന്ധവപരിഷ്കൃതിയെക്കുറിച്ചുള്ള തന്റെ ബൃഹദ്ഗ്രന്ഥത്തിൽ ഹരപ്പൻപരിഷ്കൃതിയെക്കുറിച്ചുള്ളതോടൊപ്പം സിന്ധുലിപിയെക്കുറിച്ചും എഴുതി. 1921-ൽ സിന്ധുനദീതടസംസ്കാരത്തിന്റെ അവശിഷ്ടങ്ങൾ പുറത്തുവന്നുതുടങ്ങിയതു മുതൽ ഇന്നോളം ആ വിഷയത്തിൽ നടന്നതും നടക്കുന്നതുമായ പഠനങ്ങൾ നിരവധിയാണ്. ചുരുക്കം ചില അപവാദങ്ങളൊഴിച്ചാൽ, അത്തരം പഠനങ്ങളോരോന്നും ഒരുവിധത്തിലല്ലെങ്കിൽ മറ്റൊരുവിധത്തിൽ ആ പ്രാചീനപരിഷ്കൃതിയെക്കുറിച്ചുള്ള നമ്മുടെ അറിവിനു മുതൽക്കൂട്ടായിട്ടുമുണ്ട്. സിന്ധുനദീതടപരിഷ്കൃതിയുടെ ഒരുപക്ഷേ, ഏറ്റവും ദുരൂഹവും അക്കാരണത്താൽത്തന്നെ ഏറ്റവുമധികം ജനശ്രദ്ധ ആകർഷിച്ചതുമായ വിഷയം ആ പ്രാചീനാവശിഷ്ടങ്ങളിൽപ്പെട്ട കൽഫലകങ്ങളും അവയിലെ ചിത്രങ്ങളും ലിപികളുംതന്നെ. അവയെക്കുറിച്ചുള്ള പ്രസിദ്ധീകരണങ്ങൾ ഇറങ്ങിത്തുടങ്ങിയ കാലത്തുതന്നെ സൈന്ധവലിപികളുടെ വായനയ്ക്കായി തുടങ്ങിയ യത്നം ഇന്നും തുടർന്നുപോരുകയാണ്. ആ അക്ഷരപ്പൂട്ട് തുറക്കാൻ ഇന്നോവരെ ആർക്കും കഴിഞ്ഞിട്ടില്ല. ഴ

7 निम्नलिखित अनुच्छेद को मलयालम में अनुवाद कीजिए 10

प्रेमचन्द की कहानियाँ परिवर्तित मानसिकता के आशावाद तथा क्रूर वास्तविकता के रचनात्मक संयोग से निर्मित हुई थीं। प्रेमचन्द की कहानियों का उचित मूल्यांकन देश की तत्कालीन दशा के इसी संदर्भ में किया जा सकता है। यह उस समय के पूरे उत्तर भारत की स्थिति थी जिसे प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में व्यक्त किया था और यही उनके आदर्शोन्मुख यथार्थवादी सिद्धान्त का आधार थी। किसानों और मजदूरों के समानांतर ही मध्यवर्गीय वास्तविकता थी जो बहुत अलग नहीं थी। उसमें भी अवसरवादी, मक्कार, चापलूस तथा सरकारी नौकरी पर दाँत लगाए चापलूस और स्वार्थी लोग भरे थे और कुछ लोग खासकर मध्यवर्ग की ऊपरी श्रेणी के मुट्ठी भर लोगों में से थे जो आम तौर पर ब्रिटिश शासन की बदौलत फूले-फले थे और ऐसे परिवर्तन नहीं चाहते थे जिससे हमारी मौजूदा स्थिति और स्वार्थों को धक्का लगे। प्रेमचन्द की कहानियाँ इसी स्थिति का प्रामाणिक दस्तावेज प्रस्तुत करती हैं। इन कहानियों में एक ओर साहित्यिक परम्परा के रूप में पुनर्जागरण के प्रथम चरण की मिली-जुली मध्ययुगीन प्रवृत्तियाँ थीं तथा दूसरी ओर पंचरंगी जीवन-दृष्टि लेकर आनेवाले गाँधीजी की नवीन मानसिकता तथा देश की तत्कालीन वास्तविकता थी।

——— × ———

मलयालम–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद (एम.टी.टी.–005)

(जनवरी 2020 और जुलाई 2020 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–005
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–005/एएसटी/(टी.एम.ए)/2020

अधिकतम अंक : 100

I निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10

(1) കേരളത്തിലെ ഏറ്റവും പ്രാധാന്യമേറിയ ഉത്സവങ്ങളാണ് തിരുവോണവും വിഷുവും.

(2) ഇന്നലെ രാത്രി വന്നയാളുടെ പേര് നിങ്ങൾക്ക് ഓർമ്മയുണ്ടോ?

(3) ഞായറാഴ്ച നമ്മൾ വീട്ടുപാടത്ത് കൊടുക്കണമായിരുന്നു.

(4) നിങ്ങൾ വായിക്കുന്ന വേഗത്തിൽ എനിക്ക് വായിക്കാൻ സാധിക്കുകയില്ല.

(5) ഈ കഥ വായിച്ചിട്ട് ഇതിന്റെ സംഗ്രഹം ഹിന്ദിയിൽ എഴുതിത്തന്നാലും.

(6) ജ്യോതി ഇന്നലെ ഉടനെ വന്നതിലും ആരോടും സംസാരിച്ചില്ല.

(7) രാധ ഈ നാടകം മുമ്പേ കണ്ടിട്ടുണ്ട്.

(8) ജനങ്ങൾ പത്രക്കാരനെ നല്ലവനായ പ്രതിനിധിയായി കരുതി വിശ്വസിക്കുന്നു.

(9) നാളെ എന്നാണ് നവംബർ സന്ദർശനം ചെയ്യേണ്ടത്.

(10) രാജ്യത്തിലെ എല്ലാ വിവരങ്ങളും അറിയാൻ ജനങ്ങൾക്ക് അവകാശമുണ്ട്.

2. निम्नलिखित शब्दों का मलयालम और हिंदी अर्थ बताइए। 5

	मलयालम अर्थ	हिंदी अर्थ
1) विधि		
2) आग्रह		
3) संभावना		
4) अवकाश		
5) अनुवाद		
6) योग		
7) तत्काल		
8) राशि		
9) उपन्यास		
10) संकट		
11) विजय		
12) वासना		
13) संतोष		
14) आलोचना		
15) प्रमाद		
16) आक्षेप		
17) मति		
18) शिक्षा		
19) प्रबंध		
20) प्रसंग		

3. कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके मलयालम और हिंदी में समान पर्याय मिलते हैं जैसे-

उर्दू मूलक शब्द	मलयालम	हिंदी
मिसाल	उदाहरण	उदाहरण

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, उनके मलयालम और हिंदी पर्याय दीजिए : 5

1) कोशिश
2) तारीफ़
3) एतराज़
4) तकलीफ़
5) इजाज़त
6) तकरीबन
7) खतरनाक
8) मेज़बान
9) ~~[illegible]~~ राज़ी
10) ख़ैरियत
11) उसूल
12) वाक़िफ़
13) हुकूमत
14) मेहरबानी
15) अफ़सोस
16) मंजूरी
17) मुमकिन
18) रहम
19) औलाद
20) शुरुआत

4. निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए: 7x10 = 70

1)

ഉപനിഷത്തുകളും അഥർവ വേദവും പേർഷ്യനിലേക്കു തർജമ ചെയ്യാൻ മുതിർന്നതു കൊണ്ട് ദാരാ ഷിക്കോവിന് വിലയായി കൊടുക്കേണ്ടി വന്നത് സ്വന്തം ജീവനും കിരീടവും ആണ്. ഹിന്ദുക്കളെ വെറും വിഗ്രഹാരാധകരായി മാത്രം കാണുന്ന യാഥാസ്ഥിതിക മുസ്ലീങ്ങളുടെ കണ്ണു തുറപ്പിക്കണമെന്ന താൽപര്യമായിരുന്നു ദാരായ്ക്ക്. സഹൃദയനായ ഷാജഹാൻ ചക്രവർത്തി അതിനു പ്രോത്സാഹനം നൽകി. പക്ഷേ, യാഥാസ്ഥിതികരായ സുന്നി മുസ്ലീം പണ്ഡിതന്മാർ ഇതു ഇസ്ലാം വിരുദ്ധ നടപടിയായി കരുതി. എങ്കിലും കിരീടാവകാശിയായ ദാരയ്ക്ക് എതിരെ നീങ്ങാൻ അവർ ധൈര്യം കാട്ടിയില്ല. അങ്ങനെയിരിക്കെ 1657 സെപ്റ്റംബറിൽ ഷാജഹാൻ രോഗബാധിതനായി. പഞ്ചാബ് ഗവർണറായിരുന്ന ദാര ഡെൽഹിയിലെത്തി പിതാവിനെ ശുശ്രൂഷിച്ചു. രോഗവിമുക്തനായ ഷാജഹാൻ ദാരയെ 'സുൽത്താൻ ബുലന്ദ് ഇക്ബാൽ' എന്ന പേരിൽ അനന്തരാവകാശിയായി പ്രഖ്യാപിച്ചു. ചക്രവർത്തിയുടെ സിംഹാസനത്തിന് അരികെ ഒരു സ്വർണക്കസേരയും യുവരാജാവിനു നൽകി.

വിവരം അറിഞ്ഞ ഔറംഗസീബ് കുപിതനായി. അദ്ദേഹം അപ്പോൾ ഡക്കാൺ ഗവർണറായിരുന്നു. വലിയൊരു സൈന്യവുമായി അദ്ദേഹം ആഗ്രയിലേക്ക് തിരിച്ചു. ദാരാ ഷിക്കോവിന്റെ സൈന്യവും ഔറംഗസീബിന്റെ സൈന്യവും ധർമാത് എന്ന സ്ഥലത്തു വെച്ച് ഏറ്റുമുട്ടി. യുദ്ധത്തിൽ തോറ്റ ദാരാ ഷിക്കോവ് ഡെൽഹിയിലേക്ക് പിന്മാറി. അപ്പോൾ ആഗ്രാ കോട്ടയിലായിരുന്ന ഷാജഹാനെ ഔറംഗസീബ് തടവുകാരനാക്കി.

2)

എഴുത്തിന്റെ ആരംഭം എന്നായിരുന്നു? എങ്ങനെയായിരുന്നു? എഴുത്തില്ലാത്ത കാലത്തിന്റെ കഥ എങ്ങനെയറിയും? മണ്ണിനടിയിലും ആൾപ്പെരുമാറ്റമില്ലാത്ത പാറപ്പൊത്തുകളിലും മറ്റും അറിയപ്പെടാതെ കിടന്ന പഴയ വസ്തുക്കളെ അടിസ്ഥാനപ്പെടുത്തിയാണ് പ്രാചീനമനുഷ്യന്റെ ജീവിതത്തെപ്പറ്റി ഇത്രയെങ്കിലും വിവരപ്പെട്ട അറിവു കിട്ടുന്നത്. പുരാതത്വം എന്ന പേരിൽ അതിപ്രധാനമായ ഒരു വിജ്ഞാനശാഖതന്നെ രൂപപ്പെട്ടുവന്നത് പഴയ വസ്തുക്കളെ ഖനനംചെയ്തെടുത്തു പഠിച്ചുകൊണ്ടാണ്. കന്മഴുകൾ, കലപ്പാത്രങ്ങൾ, പണിയായുധങ്ങൾ, ആഭരണങ്ങൾ, മനുഷ്യന്റെയും മൃഗങ്ങളുടെയും അവശിഷ്ടങ്ങൾ എന്നിങ്ങനെ അതിവിപുലമാണ് പുരാവസ്തുക്കളുടെ ലോകം. പുരാവസ്തുക്കളുടെ വിജ്ഞാനം നേടിയവരെ പുരാതത്വജ്ഞന്മാർ എന്നു പറയുന്നു. പുരാവസ്തുക്കൾ ഒട്ടുമുക്കാലും പൊട്ടിത്തകർന്ന നിലയിലാണ് കൈയിൽ കിട്ടുക. പുരാതത്വജ്ഞർ അവയെ കരുതലോടെ കൂട്ടിച്ചേർത്ത് പഴയ രൂപത്തിലാക്കും. പഠനം കഴിഞ്ഞ് അത്തരം വസ്തുക്കൾ കാഴ്ചബംഗ്ലാവുകളിൽ സംരക്ഷിച്ചു പ്രദർശിപ്പിക്കും. അവ പിന്നീടുവരുന്നവർക്ക് ഉപയോഗിക്കാൻ കഴിയും. ഇമ്മട്ടിൽ പുരാതത്വജ്ഞന്മാർ കണ്ടെത്തിയ ചില വസ്തുക്കളുടെ സഹായത്താലാണ് അതിപ്രാചീനകാലത്ത് മനുഷ്യർ തമ്മിൽ ആശയവിനിമയം നടത്തിയതിന്റെ അടയാളങ്ങൾ അറിയപ്പെട്ടത്.

3)

ജ്യോതിഷവുമായി നിത്യജീവിതത്തെ ബന്ധിപ്പിച്ചിട്ടുള്ള ജനങ്ങൾ ഏറെയാണ്. വിവാഹമായാലും ഗൃഹപ്രവേശമായാലും കുട്ടികളുടെ ജനനമായാലും ഗ്രഹനില നോക്കുന്നവർ എത്രയോ പേരുണ്ട്. സ്വകാര്യവും കുടുംബപരവുമായ ഏതനുഭവത്തെയും ജ്യോതിർഗോള സാന്നിധ്യവുമായി കൂട്ടിയിണക്കുന്നവരുടെയും യാത്രകൾ പോലും ജ്യോതിഷിയുടെ നിർദേശാനുസരണം നിശ്ചയിക്കുന്നവരുടെയും എണ്ണം കൂടിവരികയാണ്. പുരാണപ്രോക്തമായ ജ്യോതിഷത്തിൽ പ്രമാദം ഒട്ടുമില്ല എന്ന പ്രചരണം ഇതിനിടെ മുറുകിവരുന്നു. ജ്യോതിഷത്തെ ഭാരതീയ ജ്യോതിശ്ശാസ്ത്രത്തിന്റെ തുടർച്ചയും വളർച്ചയുമായി ഉയർത്തിക്കാട്ടാനും പലർക്കും മടിയില്ല. ടി.വി.ചാനലുകളിലൂടെയും പത്രങ്ങളിലൂടെയുമുള്ള ജ്യോതിഷ പരിപാടികളിൽ മനുഷ്യന്റെ ഭാഗധേയങ്ങളെ ആകാശഗോളങ്ങളുടെ സ്ഥാനക്രമവുമായി ചേർത്തുവെച്ചുള്ള പ്രവചനങ്ങൾ ശക്തമായിരിക്കുന്നു. ജാതകങ്ങൾ കമ്പ്യൂട്ടറിൽ ഗണിക്കപ്പെടുന്നു. വിവാഹപ്പൊരുത്തം കമ്പ്യൂട്ടർ നിശ്ചയിക്കുന്നു. സാധാരണ ജനങ്ങളെ സംബന്ധിച്ചിടത്തോളം കമ്പ്യൂട്ടറിനപ്പുറം ശാസ്ത്രസത്യം മറ്റൊന്നുമില്ല. ഇതിന്റെയെല്ലാം ഫലമായി ജ്യോതിഷവും ജ്യോതിശ്ശാസ്ത്രവും രണ്ടാണ് എന്ന സത്യംപോലും പലർക്കും അറിഞ്ഞുകൂടാ എന്നതാണവസ്ഥ.

4)

ഡെൽഹിയുടെ പ്രതീകം തന്നെയായി മാറിയ രാജ്പഥിലെ ഇൻഡ്യാ ഗേറ്റ് ഒന്നാം ലോകമഹായുദ്ധത്തിൽ മരിച്ച ഇൻഡ്യൻ സൈനികരുടെ സ്മരണയ്ക്കായി നിർമിച്ചതാണ്. 'ഓൾ ഇൻഡ്യാ വാർ മെമ്മോറിയൽ' എന്നായിരുന്നു ആദ്യം ഇതിന്റെ പേര്.

ഇൻഡ്യാഗേറ്റിന്റെ ഓരോ ഇഷ്ടികയിലും യുദ്ധത്തിൽ വീരചരമം പ്രാപിച്ച സൈനികരുടെ പേരു കൊത്തിവച്ചിട്ടുണ്ട്. 1931-ൽ ലുട്യൻസ് ആണ് ഇതു പ്ലാൻ ചെയ്തത്. അതിനു തൊട്ടു കിഴക്കു വശത്തായി അദ്ദേഹം ഒരു മേൽക്കെട്ടി (കനോപി) പണിയുകയും അതിൽ ജോർജ് അഞ്ചാമന്റെ പ്രതിമ സ്ഥാപിക്കുകയും ചെയ്തു. സ്വാതന്ത്ര്യത്തിനു ശേഷം ഇൻഡ്യൻ സർക്കാർ ചക്രവർത്തിയുടെ പ്രതിമ മാറ്റി. ഇപ്പോൾ ആ മേൽക്കെട്ടി ഒഴിഞ്ഞു കിടക്കുകയാണ്. 1971-ൽ ഇൻഡ്യാ ഗേറ്റിനു സമീപം അമർ ജവാൻ ജ്യോതി സ്ഥാപിച്ചു. ഇൻഡ്യാ ഗേറ്റിനു കിഴക്കായി മഥുരാ റോഡിനെ തൊട്ടു നാഷണൽ സ്റ്റേഡിയം സ്ഥിതി ചെയ്യുന്നു. ലുട്യൻസിന്റെ പ്ലാനിൽ ഇതുണ്ടായിരുന്നില്ല. രാജ്പഥ് പുരാണകില്ലയുടെ നേരെ അവസാനിക്കണമെന്നായിരുന്നു അദ്ദേഹത്തിന്റെ ആശയം. എന്നാൽ അവിടെ നാഷണൽ സ്റ്റേഡിയം നിർമിക്കണമെന്ന പ്രിയതമയുടെ വാശിക്ക് വൈസ്രോയി വെല്ലിങ്ടൺ പ്രഭു വഴങ്ങുകയായിരുന്നു.

4)

ഡെൽഹി നഗരത്തിന്റെ കിഴക്കുഭാഗത്തുകൂടി ഒഴുകുന്ന യമുന ഈ നഗരത്തിന്റെ ജീവനാഡിയാണ്. ഹിമാലയത്തിൽ 3306 മീറ്റർ ഉയരമുള്ള യമുനോത്രിയിൽ നിന്നാണ് ഈ നദിയുടെ ഉദ്ഭവം. സപ്ത ഗംഗകളിൽ ഒന്നായി ഗണിക്കപ്പെടുന്ന ഈ നദി നമ്മുടെ പുരാണങ്ങളും ഇതിഹാസങ്ങളുമായി ബന്ധപ്പെട്ടതാണ്. ഭാഗവതത്തിൽ വിവരിക്കുന്ന മധുരയും വൃന്ദാവനവും ഈ നദിയുടെ തീരത്താണ്.

ഹിമാലയത്തിൽ നിന്ന് ഉദ്ഭവിച്ച് ഡൂൺ താഴ്‌വരയുടെ പടിഞ്ഞാറു ഭാഗത്തു കൂടി ഒഴുകി ശിവാലിക് പർവത നിരകളിൽകൂടി യമുന ഹിന്ദുസ്ഥാൻ സമതലത്തിൽ എത്തുന്നു. അലഹബാദ് നഗരത്തിന്റെ തെക്കു പടിഞ്ഞാറ് ഭാഗത്ത് യമുന ഗംഗയിൽ ചേരുന്നു. തീർത്ഥാടന കേന്ദ്രമായ പ്രയാഗ് ഇവിടെയാണ്. ലോകത്തിന്റെ മധ്യഭാഗം ഇവിടെയാണ് എന്നാണ് പഴമക്കാർ പറയുന്നത്. 1280 കിലോമീറ്റർ ആണ് നീളം. പടിഞ്ഞാറൻ യമുനാ കനാൽ വഴി ഹരിയാണയിലും കിഴക്കൻ യമുനാ കനാൽവഴി യു.പിയിലും 1,84,132 ഹെക്ടർ സ്ഥലത്ത് ജലസേചനം നിർവഹിക്കുന്നു.

ഓഖ്‌ലയിൽ നിന്ന് ആരംഭിക്കുന്ന ആഗ്രാ കനാൽ പടിഞ്ഞാറൻ യു.പി.യുടെ പ്രധാന ജലധമനിയാണ്.

യമുനാ നദി ഇപ്പോൾ ഒഴുകുന്ന മാർഗത്തിലൂടെയല്ല മുമ്പ് ഒഴുകിയിരുന്നതെന്ന് ഭൂഗർഭ ശാസ്ത്രജ്ഞന്മാർ പറയുന്നു. ഡെൽഹി നഗരത്തിന്റെ മധ്യഭാഗത്തുകൂടി തെക്കുവടക്കായി നീണ്ടു കിടക്കുന്ന ആരവല്ലി മലയുടെ (ദെഹ്‌ലി കൊഹ്) കിഴക്കുവശത്തുകൂടിയാണല്ലോ

5)

മനുഷ്യൻ എന്നു മുതൽക്കാണ് വാനം നോക്കിത്തുടങ്ങിയത്? കൃത്യമായി ആർക്കും അറിയില്ല. പക്ഷേ, ഒരു കാര്യം തീർച്ചയാണ്. പ്രകൃതിയിൽനിന്ന് കിട്ടുന്നത് ഭുജിച്ചു കഴിഞ്ഞിരുന്ന പ്രാകൃത മനുഷ്യന് വാനനിരീക്ഷണം അത്യാവശ്യമായിരുന്നില്ല. പിന്നീട്, മൃഗങ്ങളെ പരിപാലിച്ചും കൃഷിചെയ്തും സ്ഥിരവാസം തുടങ്ങുകയും ഗ്രാമങ്ങളും നഗരങ്ങളും നിർമിച്ചു സംസ്കാരങ്ങൾ പടുത്തുയർത്തുകയും ചെയ്ത ഘട്ടത്തിലാണ് വാനനിരീക്ഷണം അനുപേക്ഷണീയമായത്. ചുരുക്കത്തിൽ, ജ്യോതിഷത്തിന് ഒരു പതിനായിരം കൊല്ലത്തിലേറെ പഴക്കമില്ല. (നാഗരികതയ്ക്ക് പുരാവസ്തു ഗവേഷകർ നൽകുന്ന പഴക്കം അത്രയുമാണല്ലോ.)

നദീതടങ്ങളിലാണ് പ്രാചീന നാഗരികതകൾ വളർന്നു വികസിച്ചതെന്ന് ചരിത്രത്തിൽ നാം പഠിക്കുന്നുണ്ട്: ചൈനയിൽ ഹൊയാങ്ഹോ, യാങ്ത്സീ നദികളുടെ തീരത്ത്, ബാബിലോണിയയിൽ (ഇപ്പോഴത്തെ ഇറാക്ക്) യൂഫ്രട്ടീസ് - ടൈഗ്രീസ് നദികളുടെ തീരത്ത്, ഈജിപ്തിൽ നൈൽ നദിയുടെ തീരത്ത്, ഇന്ത്യയിൽ സിന്ധുഗംഗാ തീരങ്ങളിൽ..

മനുഷ്യൻ ഇങ്ങനെ സ്ഥിരവാസമാക്കിയ മിക്കയിടങ്ങളിലും ജ്യോതിശാസ്ത്രം വികാസം പ്രാപിച്ചു എന്നതിന് ധാരാളം തെളിവുകൾ നമുക്കു കിട്ടിയിട്ടുണ്ട്. ഒരു നല്ല കർഷകനാകാനും നല്ല പുരോഹിതനാകാനും നല്ല തച്ചനാകാനും എന്തിന്, നല്ലൊരിടയനാകാൻപോലും അന്ന് ജ്യോതിഷം അറിയണമായിരുന്നു.

7)

കുത്തബ്മിനാറിൽ നിന്ന് ഏകദേശം അഞ്ചുകിലോമീറ്റർ വടക്കു കിഴക്കായിട്ടാണ് പഴയ സിരിഫോർട്ടിന്റെ അവശിഷ്ടങ്ങൾ കാണപ്പെടുന്നത്. 1303-ൽ അലാവുദ്ദീൻ ഖിൽജി (ഭരണകാലം 1296–1316) പണിയിച്ച ആയിരം തൂണുകളുള്ള വലിയ കൊട്ടാരവും അതിനു ചുറ്റുമുള്ള പട്ടണവും അക്കാലത്ത് ഏഷ്യയിലെങ്ങും പ്രസിദ്ധമായിരുന്നു. ദർ-ഉൽ-ഖിലാഫത്ത് (ഖലീഫിന്റെ ആവാസസ്ഥാനം) എന്നാണ് അലാവുദ്ദീൻ നഗരത്തിനു നൽകിയ പേര്.

സിരിഫോർട്ട് ഓഡിറ്റോറിയം, കമലാ നെഹ്റു കോളേജ്, ഏഷ്യാഡ് വില്ലേജ്, സ്പോർട്സ് കോംപ്ലക്സ്, ഹൗസ് ഖാസ്, പഞ്ചശീൽ പാർക്ക്, ഷാഹ്പൂർ ജാട് എന്നിവയെല്ലാം ഉൾപ്പെടുന്ന സ്ഥലങ്ങൾ കോട്ടയുടെ ഉള്ളിലായിരുന്നു. ഈ കോട്ടയും കൊട്ടാരവും പണിയുന്നതിനു മുമ്പ് കുത്തബിന് അടുത്തുള്ള കുഷക്-ഇ-ലാൽ കൊട്ടാരത്തിലായിരുന്നു സുൽത്താന്റെ താമസം. സുൽത്താൻ ബാൽബൻ (1266–1287) താമസിച്ചിരുന്നതും ഇതേ കൊട്ടാരത്തിലാണ്.

വടക്കു പടിഞ്ഞാറുനിന്ന് മംഗോളിയരുടെ ആക്രമണം ഉണ്ടാകാൻ സാധ്യതയുണ്ടെന്ന് തോന്നിയതുകൊണ്ട് ആ കാലംവരെ സൈനിക താവളമായി ഉപയോഗിച്ചിരുന്ന മൈതാനത്ത് ബലവത്തായ കോട്ട അലാവുദ്ദീൻ ഖിൽജി പണിയിച്ചത്.

7 निम्नलिखित अनुच्छेद को मलयालम में अनुवाद कीजिए : 10

आज 'साम्राज्यवाद' की पुरानी अवधारणा से भिन्न एक 'नव साम्राज्यवाद' का संदर्भ उभरने लगा है। इस नव साम्राज्यवाद के पूरे अर्थ और संदर्भ को सांस्कृतिक राजनैतिक, आर्थिक और विचार धारात्मक-संबंधों के साथ समझना आवश्यक हो गया है, क्योंकि इसने साहित्य कला संस्कृति ज्ञान-विज्ञान, इतिहास समाज-दर्शन, सौन्दर्य शास्त्र तथा अर्थशास्त्र एवं जीवन के हर अंग को अपने दायरे में समेट लिया है। आज की विकसित नई-नई बौद्धिक तकनीक ने पूरे विश्व समाज को नियंत्रित कर लिया है। तकनीकी क्रान्ति के बल पर ही समृद्ध देशों ने "विश्व बाजारवादी अर्थव्यवस्था" को दृढ़ ही नहीं किया है वरन् उपभोक्तावादी मनोवृत्ति को भी सुदृढ़ किया है। आज के वैश्विक स्तर विकसित इस नव सांस्कृतिक साम्राज्यवाद ने मानवीय संवेदना, साहित्य, धर्म कला, और परंपराओं को ध्वस्त कर दिया है। विश्व के निर्धनतम लोगों के लिये अन्तर्राष्ट्रीय मुक्त व्यापार का कोई अर्थ नहीं है। स्वाभाविक है कि भूमण्डलीकरण हिंसा में वृद्धि करे, पूंजीवादी शक्तियों का साथ दें समाज को विखण्डित करें और आर्थिक असुरक्षा को बढ़ायें। रूवांडा, सोमालिया, श्रीलंका यूगोस्लाविया आदि उदाहरण है।

—x—